Volume-1, Issue-3, June 2025

ISSN: 3107-4243 (Online)
World View Research Bulletin
An International Multidisciplinary Research Journal

स्वदेशी एवं विकसित भारत 2047

डॉ. ओमना सेनानी, सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान

शासकीय नेहरू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, देवरी जिला – सागर (मध्य प्रदेश)

सारांश

आज के दौर में विकसित भारत का सपना तभी सफल हो सकता है जब स्वदेशी उद्योगों के साथ–साथ नई तकनीकों का उपयोग किया जाए। विकसित देशों की उन्नत तकनीक से प्रेरणा लेकर गुणवत्ता पूर्ण और आधुनिक तकनीकी साधनों का उपयोग कर भारत को प्रगति के शिखर पर लाया जा सकता है। भारत 2047 का सपना हमारे राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य का प्रतीक है यह वह वर्ष होगा जब हमारा देश अपनी स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूरे करेगा और विकास के सभी आयाम नई ऊँचाइयों को छू रहे होंगे। यह दृष्टि केवल आर्थिक प्रगति तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें सामाजिक, औद्योगिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक और पर्यावरणीय संतुलन भी शामिल है।

भारत को 2047 तक एक प्रगतिशील एवं शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में देखा जा रहा है, जहाँ नागरिकों को शिक्षा, स्वास्थ्य, तकनीक, प्रौद्योगिकी और रोजगार के समान अवसर उपलब्ध हों। डिजिटल क्रांति और तकनीकी उन्नति देश को आत्मनिर्भर बनाएगी, साथ ही स्वदेशी उद्योग भी मजबूत होंगे। स्वदेशी उद्योग न केवल स्थानीय लोगों को बल्कि पूरे समाज और राष्ट्र को रोजगार उपलब्ध कराते हैं तथा स्वावलंबन एवं आर्थिक स्वतंत्रता की भावना को मजबूत करते हैं।

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने स्वदेशी को शिक्षा, विचारों और जीवन–पद्धति से जोड़ा। उन्होंने कहा कि भारतीय जनमानस में घर कर चुके विदेशी विचारों को मिटाकर स्वदेशी को अपनाया जाए। त्योहारों और दैनिक जीवन में स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग तथा तकनीकी शिक्षा को सशक्त बनाना विकसित भारत के निर्माण की आधारशिला है।

कूट शब्द:

आत्मनिर्भरता, घरेलू उत्पादन, प्रौद्योगिकी, सांस्कृतिक आत्मसम्मान, सामाजिक न्याय, स्थानीय उद्योग

प्रस्तावना

"स्वदेशी मात्र शब्द नहीं, एक संकल्प है।" स्वदेशी और स्वावलंबन के पथ पर चलकर ही नया, सशक्त और विकसित भारत का निर्माण संभव है। विकसित भारत में स्वदेशी का तात्पर्य है आत्मनिर्भर बनना, घरेलू उत्पादन एवं तकनीक को बढ़ावा देना तथा देश में निर्मित वस्तुओं एवं सेवाओं को प्राथमिकता

देना। यह एक आर्थिक अवधारणा होने के साथ–साथ राष्ट्रीय गौरव, सांस्कृतिक आत्मसम्मान और सामाजिक न्याय से भी जुड़ा है।

विकसित भारत का मूल उद्देश्य है आत्मनिर्भर भारत का निर्माण और स्थानीय उद्योगों को मजबूत बनाना। स्वदेशी का अर्थ केवल देश में बनी वस्तु नहीं, बल्कि देशवासियों के श्रम और बुद्धि से निर्मित उत्पादों और विचारों को प्राथमिकता देना है। इससे देश की आर्थिक एवं सामाजिक मजबूती बढ़ती है तथा देश का धन देश में ही रहता है।

महात्मा गांधी ने स्वदेशी को मोक्ष–साधना माना। उनका मानना था कि जितना श्रम देश की जनता करेगी, उतना ही पुरस्कार उसे मिलेगा। इस प्रकार स्वदेशी, स्वावलंबन और आत्मनिर्भरता मिलकर विकसित भारत 2047 के लक्ष्य को वास्तविकता में बदल सकते हैं।

प्रमुख उद्देश्य

- ● भारत के उद्योगों में सुधार कर युवाओं के लिए वर्तमान और भविष्य उन्मुख रोजगार सृजित करना।
- ● स्थानीय उद्योगों एवं घरेलू क्षमताओं को बढ़ावा देकर वैश्विक प्रतिस्पर्धा को बढ़ाना।
- ● आत्मनिर्भर भारत के लिए स्वदेशी के साथ विदेशों की उन्नत तकनीकों एवं प्रौद्योगिकी का उचित उपयोग।
- ● युवाओं को शिक्षा के साथ रोजगार से जोड़कर उन्हें राष्ट्र निर्माण में सक्षम बनाना।
- ● सरकारी योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन तथा समय–समय पर निरीक्षण द्वारा लक्ष्यों की प्राप्ति सुनिश्चित करना।

परिकल्पना

यह शोध पूर्णतः द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। इसमें पूर्व शोध, शोध–पत्र, सरकारी रिपोर्टों का अध्ययन कर प्राप्त आंकड़ों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है।

परिकल्पना शोध की आधारशिला होती है। समाज विज्ञान के शोध में परिकल्पनाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है।

- ● शून्य परिकल्पना (H_0):

स्वदेशी उत्पादों द्वारा विकसित भारत की संकल्पना संभव है और इस पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

- ● वैकल्पिक परिकल्पना (H_1):

स्वदेशी का विकसित भारत की संकल्पना पर कोई सकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता।

ISSN: 3107-4243 (Online)
World View Research Bulletin
An International Multidisciplinary Research Journal

पद्धति

यह अध्ययन अनुभवजन्य शोध पर आधारित है, जिसमें जानकारी क्षेत्र–अध्ययन और अनुभवजन्य स्रोतों से प्राप्त की जाती है। इस शोध में प्रकाशित दस्तावेजों की सहायता से विश्लेषण किया गया है। लक्ष्य यह जानना है कि कोई घटना क्यों और कैसे घटित होती है तथा प्रत्यक्ष अनुभव और लेखित ज्ञान के माध्यम से इसके कारणों का पता लगाया जाए।

उपयोग

मेक इन इंडिया और मेड इन इंडिया को प्रोत्साहित कर भारत में निर्मित वस्तुओं का उत्पादन और वितरण बढ़ाया जाए।

स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग और विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार को बढ़ावा दिया जाए।

उत्पादन की गुणवत्ता बढ़ाकर निर्यात को सशक्त किया जाए।

चुनौतियाँ (Challenges)

- बढ़ती बेरोजगारी: औद्योगिक विकास के बावजूद बेरोजगारी गंभीर समस्या बनी हुई है।
- आर्थिक और सामाजिक असमानता: आय और अवसरों में असमानता को दूर किए बिना विकसित भारत का लक्ष्य संभव नहीं।
- कृषि–औद्योगिक असंतुलन: दोनों क्षेत्रों में तालमेल की कमी ग्रामीण–शहरी विभाजन बढ़ाती है।
- बुनियादी ढांचे की कमजोरी: ग्रामीण कुटीर उद्योगों को सशक्त करने के लिए बुनियादी ढांचे को मजबूत करना आवश्यक है।

समाधान (Solutions)

- तकनीकी आत्मनिर्भरता और नवाचार: स्वदेशी तकनीक, डिजिटल विकास और नवाचार को बढ़ावा देना।
- बुनियादी ढांचे में निवेश: परिवहन, संचार और बंदरगाहों में निवेश से रोजगार और आर्थिक विकास दोनों बढ़ेंगे।
- MSME और स्टार्टअप समर्थन: ऋण–गारंटी योजनाओं और वित्तीय सहायता के माध्यम से नवाचार और उद्योगों को मजबूती।

ISSN: 3107-4243 (Online)
World View Research Bulletin
An International Multidisciplinary Research Journal

● वित्तीय क्षेत्र का सुदृढ़ीकरण: बैंकिंग एवं गैर–बैंकिंग संस्थाओं को मजबूत कर आर्थिक ढांचे को स्थिर बनाना।

विकसित भारत 2047 का लक्ष्य

भारत को 2047 तक एक आत्मनिर्भर, नवाचारी, समावेशी और सुशासित राष्ट्र के रूप में विकसित करना है। इसके लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, बुनियादी ढांचे और आर्थिक सुधारों पर विशेष जोर देना होगा।

गांधी जी के अनुसार ग्राम उद्योग आत्मनिर्भरता का आधार हैं। वर्तमान समय में आधुनिक तकनीक, औद्योगिकीकरण और नवाचार को भी समान महत्व देना होगा, ताकि भारत वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बन सके।

ग्रामीण उद्योगों को प्रोत्साहित कर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करना आवश्यक है, क्योंकि भारत कृषि प्रधान देश है। जब ग्रामीण क्षेत्र समृद्ध होंगे, तब स्वदेशी वस्तुओं का उत्पादन और उपयोग दोनों बढ़ेंगे।

मुख्य निष्कर्ष

● स्वदेशी एक आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आंदोलन है।

● दादाभाई नौरोजी, रानाडे और गोखले ने इसे आर्थिक सुधार के रूप में देखा, जबकि तिलक ने कहाकृ"स्वदेशी को स्वीकार करते समय विदेशी का बहिष्कार अनिवार्य है।"

● भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए विदेशी वस्तुओं पर निर्भरता कम कर स्वदेशी उत्पादन और तकनीक को प्राथमिकता देनी होगी।

● ग्रामीण उद्योग, तकनीकी नवाचार और शिक्षा तीनों मिलकर विकसित भारत की नींव बनाते हैं।

निष्कर्ष

गांधी जी ने कहा कि ग्राम उद्योगों का लोप भारत की सामाजिक और आर्थिक संरचना को कमजोर कर देगा। विकसित भारत 2047 का लक्ष्य तभी संभव है जब स्वदेशी, तकनीक, सामाजिक–आर्थिक विकास और सांस्कृतिक मूल्यों को साथ लेकर चला जाए।

स्वदेशी वस्तुओं का उत्पादन बढ़ाकर तथा विदेशी आयात को कम कर भारत आत्मनिर्भर बन सकता है। युवा पीढ़ी को तकनीकी शिक्षा और नवाचार की ओर प्रेरित कर छोटे उद्योगों को प्रोत्साहित किया जाए तो भारत एक सशक्त, विकसित और आत्मनिर्भर राष्ट्र के रूप में उभरेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- देवेंद्र स्वरूप (2016), गांधी: हिंद स्वराज से नेहरू तक, नई दिल्ली.
- अलका अग्रवाल, शिखा अग्रवाल (1999), गांधी दर्शन: विविध आयाम, पृ. 66–67.
- महेश शर्मा (2015), राष्ट्रीय पिता महात्मा गांधी, प्रतिभा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली.
- मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी (2020), चित्र पंच गांधी, भोपाल.
- डॉ. के.के. शर्मा, भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन एवं चिंतन, रिसर्च पब्लिकेशन्स, जयपुर.
- विवेक मिश्र (2014), शोध प्रविधि, बानगंगा, भोपाल.
- डॉ. सी.पी. शर्मा, डॉ. जी. श्याम सुंदरम (2022–23), राजनीति विज्ञान, राम प्रसाद एंड संस, भोपाल.

WORLD VIEW
RESEARCH BULLETIN
An International Multidisciplinary Research Journal